62 nd Kerala School Kalolsavam, January 4 to 8, 2024, Kollam

Item Code: 952 Participant Code: 103

गलती का एहसास

रोज की तरह आज भी रामू काम के लिए देर उठा। माँ उसे जगाने की बहुत कोशिश की लेकिन वो उठा ही नहीं। देर होते देखकर वह जल्दी उठा और काम जाने के लिए तैयार हो रहा था। दूसरी तरफ देखो तो उसकी माँ उसे गरमागरम खाना बना रही थी। घर से निकलते समय माँ ने उससे कहा कि "अरे बेटा खाना तो खाके जाओ। तुम्हारे लिए मैंने पसंदीदार दाल किचड़ी बनाया है।" रामू ने जवाब दिया कि "नहीं मुझे कुछ नहीं चाहिए और वैसे भी आपसे ज्यादा बेहतर उसे होटलवाले बनाते हैं।" रामू की इन बातें सुनकर माँ को बहुत दुःख हुआ।

अपने माता-पिता का एक ही पोता था रामू। रामू के चार साल के समय में उसके पिता का मौत हो गया था। उनके बाद रामू का हर चीज का ध्यान उसके माँ रखता था।

इतना भी प्यार उसे माँ देने की बावजूद भी वह अपनी माँ से प्यार नहीं करता। वह अपने माँ से नफरत करता था। रामू को दफ्तर में काम तो है लेकिन उससे रामू को बहुत तुच्छ कीमत मिलता था। इसलिए माँ और बेटे दोनों गरीबी में अपने जीवन बिताता था।

एक तरफ माँ है जो हमेशा अपने बेटे को अपने करीब होना चाहती है और दूसरी तरफ बेटे जो माँ से हमेशा केलिए दूर होना चाहता है।

जब भी माँ उससे बातें करने गया तो वो कुछ भी उलटा कहकर उनसे नाराज़ होता है। अपने बेटे दफ्तर से आने के बाद थक गई होगी सोचकर चाय बनाती थी और रामू घर पहुँचते सो जाता था। रामू अपने माँ केलिए कोई महत्व नही देते थे।

रामू के माँ को अपने दोनो गुर्दों में खराबी थी। उनपर बुढ़ापे का असर दिखाना शुरू हुआ था। माँ की बीमारी की इलाज करने का पैसा न होने के कारण उसने इलाज के बारे में बिलकुल भी नही सोचा। अपनी माँ की बुरी हालत में रामू ने उसका साथ नही दिया। इलाज केलिए पैसे वह किसीसे माँगी भी नही, बाद में उन पैसों को कैसे लौटाएं सोचकर। बचपन में उसी माँ ने उसका कितना ख्याल रखा वह रामू याद ही नही करता था।

दिन यूँ ही बीत रही थी। साथ में माँ की हालत खराब होता जा रहा था। ऐसे समय उनका आगया कि वह बिस्तर से उठना ही बड़ी मुश्किल था। फिर भी अपनी बीमारी

अपने साथ रखकर बिलकुल भी अपने बेटे की शिकायत करके जीता था।

एक दिन उनकी हालत बहुत बुरी हो गई थी। वह साँस भी ठीक से नहीं ले सकती थी। उस समय रामू से माँ ने बोला कि "बेटा रामू, मेरी हालत बहुत खराब हो गई। मुझे लगता भी नहीं कि मैं अब कितना देर रह पाऊँगा। जब तुम मेरे पास रहते हो तब मुझे थोड़ा अच्छा महसूस होता है। बेटा, क्या आज तुम मेरे साथ रह सकते हो?" माँ ने उससे बोला जैसे वे जानती थी वह उनकी आखिरी दिन थी। रामू ने जवाब दिया कि "ये तुम क्या कह रहे एक तरफ मैं अपने काम के बारे में सोचकर परेशान हूँ दूसरी तरफ आप यह सब बोल रहे हो आप होश में तो हैं न!" रामू अपने माँ से चिल्लाकर घर के बाहर बैठा। उसी समय पड़ोसी के कुछ लोग माँ को संदर्श करने के लिए घर आया। और वापस लौटते समय उन्होंने रामू से बहुत कहा कि, उसे काम छोड़के अपने माँ की देखभाल करना चाहिए ऐसा नहीं होना चाहिए, ऐसा नहीं...। यह सब सुनकर रामू को और भी गुस्सा आया और वो घर के पास का एक नदी के किनारे पर बैठ गया। और अपने सारे परेशानियों को सोचने लगा।

सोचते सोचते ही उसने पेड़ पर एक नज़ारा देखा। उसने देखा कि एक पेड़ पे एक चिड़िया माँ अपने बच्चों को खाना खिला रहा था। अपने खोंसले का देखभाल कर रहा था और कैसे उस चिड़िया माँ अपने बच्चों को प्यार दे रहा था। यह नज़ारा देखकर रामू को एकदम चकमा लगा। वह सोचने लगा अपनी माँ भी उसे बचपन में कितना पालते थे और कितना उनका देखभाल किया। ठीक समय उसे अपनी गलती का एहसास हुआ और अपने माँ से माँफी माँगने कोलिए घर चला गया। घर पहुँचते ही उसने देखा की लोगों की भीड़ थी। वह अंदर गया और माँ को देखते ही स्तब्ध रह गया। माँ सफेद कपड़े में बैठे थे। उसे पता चल गया कि वह आँखें हमेशा कोलिए नहीं खुलनेवाली है। रामू का दिल टुकड़ा टुकड़ा हो गया। वह अपने सारी गलतियाँ याद करने लगी। वह सोचने लगा कि काश अगर वो उस समय माँ के साथ होता तो। रामू मानता है कि यह गलती उसका जीवन का सबसे बड़ी गलती है। माँ के मृत्यु के बाद रामू की जिंदगी खराब होते ही जाती। नदी से वापस घर आते वक्त देखा अपनी माँ को वह अभी भी याद करता है।

* * * * *